



माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के संबंध का अध्ययन सुश्री अंजू गहोई

शोधार्थी, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. (डॉ.) एम. एस. पवार

प्रोफेसर और डीन, शिक्षा विभाग, आरकेडीएफ यूनिवर्सिटी, भोपाल

Article Info

Article History:

Published: 30 Sept 2026

Publication Issue:

Volume 3, Issue 9
September-2026

Page Number:

650-660

Corresponding Author:

सुश्री अंजू गहोई

Abstract:

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के स्तर का अध्ययन करना तथा आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के पाँच प्रमुख आयामों—बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा अनुभवों के प्रति खुलापन—के बीच संबंध का पता लगाना था। अध्ययन में मध्य प्रदेश के भोपाल जिले के 16 माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 9 एवं 10 में अध्ययनरत 1120 विद्यार्थियों, जिनमें 560 छात्र एवं 560 छात्राएँ थीं, को नमूने में सम्मिलित किया गया। वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता मापनी तथा ओ. पी. जॉन, ई. एम. डोनाह्यू एवं आर. एल. केंटल द्वारा विकसित बिग फाइव व्यक्तित्व सूची का प्रयोग किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा पियर्सन के उत्पाद-क्षण सहसंबंध गुणांक के माध्यम से किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि 3 प्रतिशत विद्यार्थियों में उच्च, 64 प्रतिशत में मध्यम तथा 33 प्रतिशत में निम्न स्तर की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता पाई गई। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का बहिर्मुखता, कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुभवों के प्रति खुलापन के साथ धनात्मक एवं सार्थक संबंध तथा भावनात्मक स्थिरता के साथ ऋणात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया, जबकि सहमतिशीलता के साथ कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना आंशिक रूप से अस्वीकृत हुई। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के साथ आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का महत्वपूर्ण संबंध है।

Keywords: आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता, व्यक्तित्व विकास, किशोरावस्था, बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता, अनुभवों के प्रति खुलापन।

परिचय

व्यक्तित्व मानव जीवन की उन विशिष्ट विशेषताओं का समन्वित रूप है, जिनके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, अभिवृत्तियों, व्यवहार तथा सामाजिक संबंधों को व्यक्त करता है। व्यक्तित्व केवल व्यक्ति के बाह्य व्यवहार अथवा दिखाई देने वाले गुणों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उसकी मनोवैज्ञानिक विशेषताओं, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं, मूल्यों, विश्वासों तथा विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करने की प्रवृत्तियों की संगठित संरचना को प्रतिबिंबित करता है। व्यक्तित्व व्यक्ति के अनुभवों, पारिवारिक वातावरण, सामाजिक परिवेश, शिक्षा तथा व्यक्तिगत विकास की प्रक्रियाओं के साथ निरंतर विकसित होता रहता है। इस दृष्टि से व्यक्तित्व को एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है, जिसमें जैविक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक कारकों की निरंतर अंतःक्रिया होती है।

व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से किशोरावस्था अत्यंत महत्वपूर्ण अवस्था है। माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थी सामान्यतः किशोरावस्था के ऐसे चरण से गुजर रहे होते हैं, जिसमें उनके शारीरिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा सामाजिक जीवन में तीव्र परिवर्तन होते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थी अपने अस्तित्व, पहचान, जीवन के उद्देश्य, मूल्यों तथा भविष्य को लेकर नए प्रश्नों पर विचार करना प्रारंभ करते हैं। उनमें अमूर्त चिंतन, आत्म-जागरूकता तथा अपने सामाजिक परिवेश में अपनी भूमिका को समझने की क्षमता विकसित

होती है। एरिकसन के अनुसार, किशोरावस्था में व्यक्ति के विकास का प्रमुख मनोसामाजिक कार्य पहचान की भावना का निर्माण है। इस अवधि में प्राप्त अनुभव, सामाजिक संबंध, शैक्षिक वातावरण तथा जीवन-मूल्यों का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास पर दीर्घकालिक रूप से पड़ सकता है।

व्यक्तित्व के वैज्ञानिक अध्ययन में पंच-कारक मॉडल को व्यापक स्वीकृति प्राप्त हुई है। इस मॉडल के अंतर्गत व्यक्तित्व को बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा अनुभवों के प्रति खुलापन जैसे पाँच प्रमुख आयामों के माध्यम से समझा जाता है। ये आयाम व्यक्ति की सामाजिक सहभागिता, दूसरों के साथ संबंध स्थापित करने की प्रवृत्ति, आत्म-अनुशासन, भावनात्मक संतुलन तथा नवीन विचारों एवं अनुभवों को स्वीकार करने की प्रवृत्ति को समझने में सहायता करते हैं। माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संदर्भ में इन व्यक्तित्व आयामों का विकास उनके विद्यालयी समायोजन, सामाजिक व्यवहार, निर्णय-निर्माण तथा भविष्य के जीवन के लिए विशेष महत्व रखता है।

व्यक्तित्व विकास की इसी व्यापक प्रक्रिया में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक क्षमता के रूप में देखा जा सकता है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता से आशय व्यक्ति की उस क्षमता से है, जिसके माध्यम से वह जीवन के अर्थ एवं उद्देश्य को समझता है, अपने अनुभवों को व्यापक संदर्भ में देखता है, अपने मूल्यों एवं आंतरिक विश्वासों के आधार पर जीवन के निर्णय करता है तथा स्वयं और दूसरों के अस्तित्व के प्रति गहरी संवेदनशीलता विकसित करता है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को किसी विशेष धार्मिक विश्वास अथवा धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए। इसके अंतर्गत जीवन के अर्थ की खोज, आत्म-जागरूकता, मूल्य-बोध, करुणा, अंतःचिंतन, नैतिक विवेक तथा जीवन की परिस्थितियों को व्यापक दृष्टिकोण से समझने जैसी क्षमताएँ सम्मिलित हो सकती हैं।

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता की अवधारणा को विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग दृष्टिकोणों से स्पष्ट किया है। जोहार और मार्शल ने आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को जीवन के संदर्भ में अर्थ, मूल्य और उद्देश्य की खोज तथा समस्याओं को व्यापक एवं गहरे संदर्भ में देखने की क्षमता से जोड़ा। किंग के अनुसार, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता में अस्तित्व संबंधी चिंतन, व्यक्तिगत अर्थ-निर्माण, चेतना की अवस्थाओं का विस्तार तथा पारलौकिक जागरूकता जैसे आयाम सम्मिलित किए जा सकते हैं। इस प्रकार आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को केवल यह समझने में सहायता नहीं करती कि वह क्या कर रहा है, बल्कि यह भी समझने में सहायता करती है कि वह ऐसा क्यों कर रहा है तथा उसके कार्यों का उसके जीवन और दूसरों के जीवन पर क्या अर्थ एवं प्रभाव है।

किशोरावस्था में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का महत्व इसलिए और बढ़ जाता है, क्योंकि इस अवस्था में विद्यार्थी जीवन के उद्देश्य, सही और गलत, व्यक्तिगत मूल्यों, संबंधों तथा भविष्य से जुड़े प्रश्नों पर विचार करने लगते हैं। यदि विद्यार्थी अपने अनुभवों को अर्थपूर्ण संदर्भ में समझने, कठिन परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखने तथा अपने निर्णयों को मूल्यों के आधार पर निर्देशित करने की क्षमता विकसित करते हैं, तो यह उनके समग्र व्यक्तित्व विकास में योगदान कर सकता है। आत्म-जागरूकता विद्यार्थी को अपनी शक्तियों एवं सीमाओं को समझने में सहायता कर सकती है, जबकि मूल्य-बोध और नैतिक विवेक उसे अपने व्यवहार का मूल्यांकन करने तथा उत्तरदायी निर्णय लेने में सहायता कर सकते हैं। इसी प्रकार करुणा एवं दूसरों के प्रति संवेदनशीलता सामाजिक संबंधों और सहयोगात्मक व्यवहार के विकास में योगदान दे सकती है।

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के बीच संबंध को इस आधार पर समझा जा सकता है कि व्यक्ति के आंतरिक मूल्य, आत्म-जागरूकता, जीवन के प्रति दृष्टिकोण तथा भावनात्मक एवं नैतिक निर्णय उसके व्यवहार और व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, आध्यात्मिक रूप से जागरूक विद्यार्थी में दूसरों के साथ सकारात्मक सामाजिक सहभागिता और सहयोग की प्रवृत्ति अधिक विकसित हो सकती है, जो सहमतिशीलता से संबंधित है। जीवन के उद्देश्य और व्यक्तिगत मूल्यों की स्पष्ट समझ कर्तव्यनिष्ठा,

उत्तरदायित्व तथा आत्म-अनुशासन से जुड़ सकती है। इसी प्रकार आत्म-चिंतन एवं आंतरिक संतुलन भावनात्मक स्थिरता के विकास में सहायक हो सकते हैं, जबकि विभिन्न दृष्टिकोणों और जीवन-अनुभवों को व्यापक रूप से स्वीकार करने की क्षमता अनुभवों के प्रति खुलेपन से संबंधित हो सकती है। हालांकि, इन संबंधों को कारणात्मक रूप में स्वीकार करने के बजाय अनुभवजन्य अध्ययन के माध्यम से जाँचना आवश्यक है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था भी विद्यार्थियों के विकास को केवल संज्ञानात्मक उपलब्धियों तक सीमित न रखकर उनके सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक तथा मूल्यपरक विकास पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० शिक्षा को समग्र एवं सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया के रूप में देखती है तथा विद्यार्थियों में करुणा, सहानुभूति, नैतिक मूल्यों, उत्तरदायित्व, चरित्र तथा संतुलित व्यक्तित्व के विकास पर बल देती है। इस संदर्भ में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन शिक्षा के उस व्यापक उद्देश्य से जुड़ा है, जिसमें विद्यार्थी को केवल सफल शिक्षार्थी ही नहीं, बल्कि विवेकशील, संवेदनशील, उत्तरदायी तथा मूल्य-आधारित व्यक्ति के रूप में विकसित करना अपेक्षित है।

अतः माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व विकास के बीच संबंध का अध्ययन शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन यह समझने में सहायता कर सकता है कि विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों से किस प्रकार संबंधित है। इसके निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय प्रशासकों तथा शैक्षिक योजनाकारों को ऐसी शैक्षिक एवं सह-पाठ्यचर्या संबंधी प्रक्रियाओं के विकास में उपयोगी आधार प्रदान कर सकते हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थियों में आत्म-जागरूकता, मूल्य-बोध, नैतिक विवेक, सामाजिक संवेदनशीलता तथा संतुलित व्यक्तित्व का विकास किया जा सके। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास को समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता की अवधारणा ने मनोविज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रूप से तब ध्यान आकर्षित किया, जब बुद्धिमत्ता को केवल तार्किक, भाषायी अथवा संज्ञानात्मक क्षमताओं तक सीमित न मानकर व्यक्ति की अर्थ-निर्माण, आत्म-जागरूकता और जीवन के व्यापक उद्देश्यों को समझने की क्षमताओं से जोड़कर देखा जाने लगा। जोहार और मार्शल (2000) ने आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को ऐसी क्षमता के रूप में प्रस्तुत किया, जिसके माध्यम से व्यक्ति जीवन की गहन समस्याओं पर चिंतन करता है, अपने अनुभवों में अर्थ खोजता है तथा अपने जीवन को मूल्यों और उद्देश्य के अनुरूप निर्देशित करता है। इसी प्रकार एमन्स (2000) ने आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को आध्यात्मिक सूचनाओं और क्षमताओं के अनुकूलनात्मक उपयोग तथा समस्या-समाधान से संबंधित माना। हाल के साहित्य में भी आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को आत्म-जागरूकता, जीवन के अर्थ एवं उद्देश्य की खोज तथा अस्तित्व संबंधी प्रश्नों से निपटने की क्षमता के रूप में देखा गया है।

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता की संकल्पना को व्यवस्थित रूप प्रदान करने की दिशा में किंग (2008) तथा किंग और डीचिको (2009) का कार्य महत्वपूर्ण है। किंग और डीचिको (2009) ने आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का चार-आयामी मॉडल प्रस्तुत किया, जिसमें आलोचनात्मक अस्तित्वात्मक चिंतन, व्यक्तिगत अर्थ-निर्माण, पारलौकिक जागरूकता तथा चेतना की अवस्थाओं का विस्तार सम्मिलित हैं। इन आयामों के आधार पर विकसित आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता स्व-रिपोर्ट सूची ने अपने संरचनात्मक एवं विश्वसनीयता संबंधी गुणों के लिए समर्थन प्राप्त किया। इस मॉडल के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता केवल धार्मिक आस्था या धार्मिक व्यवहार का पर्याय नहीं है, बल्कि व्यक्ति की अस्तित्व संबंधी चिंतनशीलता, जीवन के उद्देश्य की समझ और अपने अनुभवों को व्यापक संदर्भ में देखने की क्षमता से संबंधित है।

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के संबंध को समझने के लिए पंच-कारक व्यक्तित्व मॉडल विशेष रूप से उपयोगी आधार प्रदान करता है। मैकक्रे और कोस्टा (1992) के पंच-कारक मॉडल में बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, तंत्रिकातापिता तथा अनुभवों के प्रति खुलापन व्यक्तित्व के प्रमुख आयाम माने जाते हैं। इन आयामों के माध्यम से व्यक्ति की सामाजिक सहभागिता, सहयोगात्मक प्रवृत्ति, आत्म-अनुशासन, भावनात्मक प्रतिक्रियाशीलता तथा नवीन विचारों एवं अनुभवों के प्रति ग्रहणशीलता को समझा जा सकता है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के अंतर्गत आत्म-जागरूकता, जीवन के उद्देश्य की स्पष्टता, करुणा, मूल्य-आधारित निर्णय तथा व्यापक दृष्टिकोण जैसी विशेषताएँ सम्मिलित होने के कारण इसके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों से संबंधित होने की सैद्धांतिक संभावना दिखाई देती है।

इस संबंध को अनुभवजन्य आधार प्रदान करते हुए सूद, बख्शी और गुप्ता (2012) ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में व्यक्तित्व, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और कल्याण के बीच संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के लिए किंग की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता स्व-रिपोर्ट सूची तथा व्यक्तित्व के लिए पंच-कारक व्यक्तित्व सूची का प्रयोग किया गया। निष्कर्षों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के व्यक्तिगत अर्थ-निर्माण आयाम का सहमतिशीलता तथा तंत्रिकातापिता के साथ महत्वपूर्ण संबंध पाया गया, जबकि पारलौकिक जागरूकता का अनुभवों के प्रति खुलेपन से महत्वपूर्ण संबंध पाया गया। अध्ययन में पारलौकिक जागरूकता को कल्याण का महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक भी पाया गया।

इसी प्रकार, एक अन्य अध्ययन में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों के बीच संबंध का परीक्षण किया गया। इस प्रकार के अध्ययनों में यह संकेत प्राप्त हुआ है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता व्यक्तित्व के सामाजिक, अनुकूलनात्मक तथा आत्म-नियमन संबंधी पक्षों से जुड़ी हो सकती है। विशेष रूप से आत्म-जागरूकता, जीवन में अर्थ की खोज तथा व्यापक दृष्टिकोण जैसी आध्यात्मिक क्षमताएँ व्यक्ति के व्यक्तित्वगत व्यवहार को प्रभावित करने वाली मनोवैज्ञानिक विशेषताओं से संबंधित दिखाई देती हैं।

भारतीय संदर्भ में भी आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के संबंध का अध्ययन किया गया है। एंथनी और सुब्रमणियन (2016) ने महाविद्यालयीन विद्यार्थियों पर आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के व्यक्तित्व कारकों पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के मापन के लिए किंग की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता सूची तथा व्यक्तित्व के आकलन के लिए पंच-कारक व्यक्तित्व मापन का उपयोग किया गया। अध्ययन इस बात की ओर संकेत करता है कि विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के बीच संबंध को भारतीय शैक्षिक संदर्भ में भी अनुभवजन्य रूप से समझा जा सकता है।

हाल के अध्ययनों ने भी आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के पारस्परिक संबंध को आगे बढ़ाया है। उदाहरण के लिए, पोलैंड में किए गए एक अध्ययन में पंच-कारक व्यक्तित्व, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा क्षमा के बीच संबंधों का परीक्षण किया गया और आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को व्यक्तित्व तथा भावनात्मक एवं निर्णयात्मक क्षमा के बीच संभावित मध्यस्थ कारक के रूप में देखा गया। इससे यह संकेत मिलता है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता केवल व्यक्तित्व से स्वतंत्र एक क्षमता नहीं है, बल्कि व्यक्ति की अन्य मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के साथ अंतःक्रिया कर सकती है।

हालाँकि, उपलब्ध साहित्य के आलोचनात्मक अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता की अवधारणा को लेकर पूर्ण सैद्धांतिक सहमति नहीं है। विभिन्न विद्वानों ने इसे बुद्धिमत्ता, क्षमता, चेतना अथवा आध्यात्मिक अभिविन्यास के रूप में अलग-अलग ढंग से परिभाषित किया है। हाल की व्यवस्थित साहित्य समीक्षा में भी यह पाया गया कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता की अवधारणा और उसके आयामों की व्याख्या सांस्कृतिक एवं दार्शनिक संदर्भों के अनुसार भिन्न हो सकती है। इसलिए भारतीय किशोरों के संदर्भ में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन करते समय सांस्कृतिक और शैक्षिक संदर्भ को ध्यान में रखना आवश्यक है।

उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता व्यक्ति के जीवन में अर्थ एवं उद्देश्य की समझ, आत्म-जागरूकता, मूल्य-बोध और व्यापक जीवन-दृष्टिकोण से संबंधित है तथा इसका संबंध व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों से पाया गया है। फिर भी उपलब्ध अध्ययनों का पर्याप्त भाग वयस्कों अथवा महाविद्यालयीन विद्यार्थियों पर केंद्रित है। माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों, विशेषकर भारतीय किशोरों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के पाँच प्रमुख आयामों के बीच संबंध का समग्र अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देता है। अतः वर्तमान अध्ययन इस शोध-अंतर को संबोधित करते हुए माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के बीच संबंध का अनुभवजन्य अध्ययन करने का प्रयास करता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

किशोरावस्था मानव विकास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील अवस्था है। माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी इस अवस्था में शारीरिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक तथा नैतिक स्तर पर तीव्र परिवर्तनों का अनुभव करते हैं। इस अवधि में विद्यार्थी अपने अस्तित्व, जीवन के उद्देश्य, मूल्यों, संबंधों तथा भविष्य को लेकर अनेक प्रश्नों पर विचार करने लगते हैं। अतः माध्यमिक विद्यालय की शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में वृद्धि करना नहीं, बल्कि उनके संतुलित, उत्तरदायी एवं समग्र व्यक्तित्व के विकास के लिए उपयुक्त आधार प्रदान करना भी है। इसी संदर्भ में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक क्षमता के रूप में सामने आती है, जो व्यक्ति को जीवन के अर्थ, उद्देश्य, मूल्यों तथा व्यापक मानवीय अनुभवों को समझने में सहायता कर सकती है।

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का संबंध व्यक्ति की उस क्षमता से है जिसके माध्यम से वह जीवन की गहन वास्तविकताओं, उद्देश्य, मूल्यों तथा अस्तित्व संबंधी प्रश्नों पर चिंतन करता है और इन समझों का उपयोग अपने जीवन एवं व्यवहार को दिशा देने में करता है। एमन्स (2000) ने आध्यात्मिकता को बुद्धिमत्ता के संदर्भ में समझने की संभावना प्रस्तुत करते हुए जीवन की अंतिम चिंताओं, अर्थ तथा उद्देश्य से संबंधित क्षमताओं पर बल दिया। इसी प्रकार, किंग और डीचिको (2009) ने आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को अस्तित्व संबंधी चिंतन, व्यक्तिगत अर्थ-निर्माण, चेतना के विस्तार तथा जीवन के विभिन्न पक्षों के समेकन से संबंधित क्षमता के रूप में प्रतिपादित किया। इस दृष्टि से आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता विद्यार्थी को केवल बाहरी परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया करने के बजाय अपने अनुभवों के अर्थ को समझने और जीवन के प्रति अधिक उद्देश्यपूर्ण दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता कर सकती है।

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के संदर्भ में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन इसलिए आवश्यक है क्योंकि व्यक्तित्व केवल बाह्य व्यवहारों का समुच्चय नहीं है, बल्कि व्यक्ति के विचारों, भावनाओं, अभिवृत्तियों, मूल्यों, आत्म-अनुशासन तथा सामाजिक व्यवहार की संगठित अभिव्यक्ति है। व्यक्तित्व के अध्ययन में पंच-कारक मॉडल विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है, जिसमें बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा अनुभवों के प्रति खुलापन प्रमुख आयाम हैं (मैकक्रे एवं कोस्टा, 1992)। इन आयामों का विकास किशोरावस्था में व्यक्ति के सामाजिक समायोजन, निर्णय-निर्माण, आत्म-नियमन तथा भविष्य के व्यवहार को प्रभावित कर सकता है। इसलिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के बीच किस प्रकार का संबंध विद्यमान है।

उपलब्ध अध्ययनों से आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा व्यक्तित्व के बीच संबंध की संभावना का संकेत मिलता है। सूद, बख्शी एवं गुप्ता (2012) ने विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों के संदर्भ में व्यक्तित्व लक्षणों, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा कल्याण के बीच संबंध का अध्ययन किया और इन मनोवैज्ञानिक चरों के पारस्परिक संबंधों की ओर संकेत किया। एंथनी एवं सुब्रमणियन (2016) ने महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा व्यक्तित्व कारकों के संबंध का अध्ययन किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को व्यक्तित्व संबंधी विशेषताओं के संदर्भ में समझना शोध की दृष्टि से उपयोगी है। हालांकि, उपलब्ध साहित्य का एक महत्वपूर्ण भाग उच्च शिक्षा

के विद्यार्थियों पर केंद्रित है। माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों, विशेषकर किशोरावस्था में व्यक्तित्व विकास तथा आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के संबंध को समझने वाले अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देते हैं।

इस अध्ययन की आवश्यकता का एक अन्य आधार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों के समग्र विकास पर बढ़ता हुआ बल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को केवल संज्ञानात्मक उपलब्धि तक सीमित न रखते हुए विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक तथा समग्र विकास पर बल देती है। शिक्षा का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का विकास करना है जो विवेकपूर्ण चिंतन के साथ-साथ मानवीय मूल्यों, संवेदनशीलता, करुणा, उत्तरदायित्व तथा नैतिक दृष्टिकोण से युक्त हों। इस संदर्भ में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन विद्यालयी शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों से जुड़ जाता है।

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, आत्म-जागरूकता, मूल्यपरक चिंतन तथा उद्देश्य-बोध को विकसित करने में सहायक हो सकती है। किंग (2008) द्वारा प्रस्तुत आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के मॉडल में अस्तित्व संबंधी चिंतन तथा व्यक्तिगत अर्थ-निर्माण जैसी क्षमताओं को महत्व दिया गया है। इसी प्रकार, किंग एवं डीचिको (2009) ने आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को व्यक्ति की चेतना एवं जीवन-अनुभवों को व्यापक अर्थ प्रदान करने वाली क्षमता से जोड़ा। ऐसी क्षमताएँ किशोर विद्यार्थियों को व्यक्तिगत चुनौतियों, सामाजिक संबंधों, शैक्षिक दबावों तथा भविष्य से संबंधित अनिश्चितताओं को अधिक सार्थक दृष्टिकोण से समझने में सहायता कर सकती हैं।

यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों तथा विद्यालय प्रशासकों के लिए भी महत्वपूर्ण हो सकता है। यदि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के बीच सार्थक संबंध पाया जाता है, तो विद्यालयी स्तर पर ऐसी शैक्षिक एवं सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों को विकसित करने की संभावना बढ़ सकती है, जो विद्यार्थियों में आत्म-चिंतन, मूल्य-बोध, उद्देश्य-बोध, सामाजिक संवेदनशीलता तथा सकारात्मक व्यक्तित्व विशेषताओं के विकास में सहायक हों। इससे शिक्षा को केवल परीक्षा एवं उपलब्धि-केंद्रित दृष्टिकोण से आगे बढ़ाकर व्यक्तित्व के समग्र विकास की दिशा में ले जाने में सहायता मिल सकती है।

अतः “माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के संबंध का अध्ययन” वर्तमान शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक संदर्भ में महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के स्तर को समझने तथा उसके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के साथ संबंध का अनुभवजन्य अध्ययन करने में सहायता करेगा। इसके निष्कर्ष किशोर विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए अधिक संवेदनशील, मूल्यपरक एवं विद्यार्थी-केंद्रित शैक्षिक प्रयासों के निर्माण में उपयोगी हो सकते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के स्तर का पता लगाना।
2. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता और अनुभवों के प्रति खुलापन के बीच संबंध का पता लगाना।

शोध प्रश्न

प्रस्तुत अध्ययन के लिए तैयार किए गए शोध प्रश्न ये हैं –

- माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर क्या है?

परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन के लिए तैयार किए गए परिकल्पनाएं निम्न हैं –

- माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता और अनुभवों के प्रति खुलापन के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है।

कार्यविधि

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के संबंध का अध्ययन करने के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के स्तर का अध्ययन करना तथा आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के पाँच आयामों – बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा अनुभवों के प्रति खुलापन के मध्य संबंध ज्ञात करना था।

अध्ययन मध्य प्रदेश के भोपाल जिले में किया गया। इसके लिए कुल 16 माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया, जिनमें 8 शासकीय तथा 8 निजी प्रबंधित विद्यालय थे। इनमें 8 विद्यालय ग्रामीण तथा 8 शहरी क्षेत्रों से चयनित किए गए। चयनित विद्यालयों की कक्षा 9 एवं 10 में अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों को नमूने में सम्मिलित किया गया, जिससे कुल 1120 विद्यार्थी प्राप्त हुए, जिनमें 560 छात्र एवं 560 छात्राएँ थीं।

आँकड़ों के संकलन हेतु दो उपकरणों का प्रयोग किया गया। प्रथम, शोधकर्ता द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता मापनी तथा द्वितीय, ओ. पी. जॉन, ई. एम. डोनाह्यू एवं आर. एल. केंटल द्वारा विकसित बिग फाइव व्यक्तित्व सूची। आवश्यक अनुमति प्राप्त करने के पश्चात दोनों उपकरणों का चयनित विद्यार्थियों पर निर्धारित निर्देशों एवं मानकीकृत परिस्थितियों में प्रशासन किया गया तथा प्रतिक्रियाओं का अंकन संबंधित उपकरणों की निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार किया गया।

प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के लिए आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा पियर्सन के उत्पाद-क्षण सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। आवृत्ति एवं प्रतिशत के माध्यम से आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के स्तर का वितरण ज्ञात किया गया, जबकि माध्य एवं मानक विचलन द्वारा प्राप्तांकों का वर्णनात्मक विश्लेषण किया गया। अंततः, पियर्सन के उत्पाद-क्षण सहसंबंध गुणांक द्वारा आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा व्यक्तित्व के पाँचों आयामों के मध्य संबंध की दिशा एवं तीव्रता निर्धारित की गई।

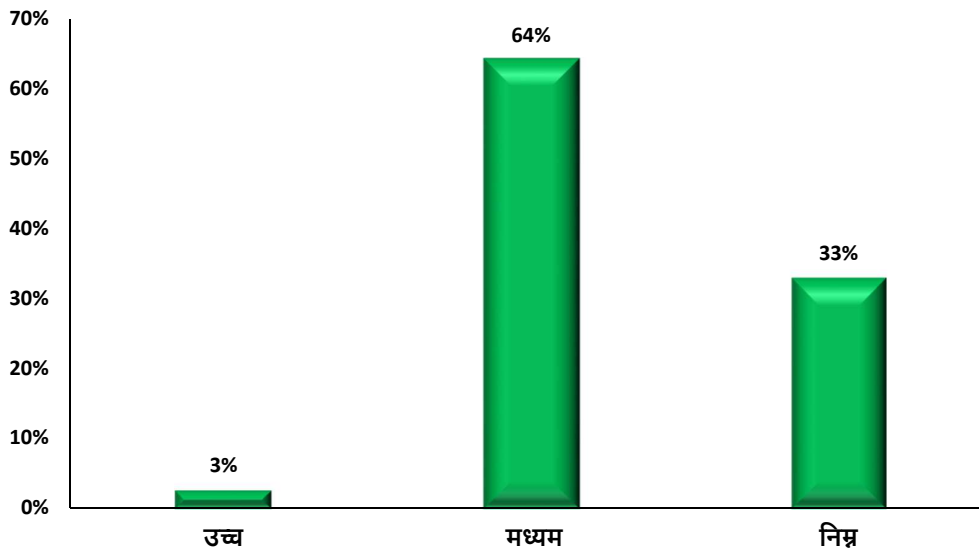
परिणाम और विश्लेषण

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर

प्रस्तुत अध्ययन का द्वितीय उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के स्तर का पता लगाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोध प्रश्न माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर क्या है? का निर्माण किया गया है।

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का मापन शोधकर्ता द्वारा विकसित आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता मापनी के माध्यम से किया गया। प्राप्त आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता प्राप्तांकों के आधार पर विद्यार्थियों को उच्च, मध्यम तथा निम्न आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता स्तर

की श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया। समस्त माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की श्रेणीवार आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का वितरण आरेख 1 में प्रस्तुत किया गया है।



आरेख 1 माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर

आरेख 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 3 प्रतिशत माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में उच्च स्तर की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता, 64 प्रतिशत विद्यार्थियों में मध्यम स्तर की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा 33 प्रतिशत विद्यार्थियों में निम्न स्तर की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता पाई गई। आगे के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि लगभग दो-तिहाई माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में मध्यम स्तर की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता विद्यमान है।

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा अनुभवों के प्रति खुलेपन के बीच संबंध

परिकल्पना है –“माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता एवं अनुभवों के प्रति खुलेपन के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है।” माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता एवं अनुभवों के प्रति खुलेपन के बीच संबंध ज्ञात करने के लिए पियर्सन के गुणनफल आघूर्ण सहसंबंध का प्रयोग किया गया। ‘आर’ का मान तालिका 4.28 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता, बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा अनुभवों के प्रति खुलेपन के लिए ‘आर’ का मान

चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	‘आर’ का मान	सार्थकता का स्तर
आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता	1120	63.23	10.080	0.414	0.01
बहिर्मुखता	1120	29.32	6.590		
आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता	1120	63.23	10.080	0.039	0.01

सहमतिशीलता	1120	59.97	15.453		
आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता	1120	63.23	10.080	0.401	0.01
कर्तव्यनिष्ठा	1120	33.31	5.853		
आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता	1120	63.23	10.080	0.201	0.01
भावनात्मक स्थिरता	1120	18.49	11.069		
आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता	1120	63.23	10.080	0.503	0.01
अनुभवों के प्रति खुलापन	1120	30.45	8.892		

तालिका 1 से आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के बीच संबंध स्पष्ट होता है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं बहिर्मुखता के बीच 'आर' का मान 0.414 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं सहमतिशीलता के बीच 'आर' का मान 0.039 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं कर्तव्यनिष्ठा के बीच 'आर' का मान 0.401 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं भावनात्मक स्थिरता के बीच 'आर' का मान 0.201 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं अनुभवों के प्रति खुलेपन के बीच 'आर' का मान 0.503 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। चूँकि सहमतिशीलता को छोड़कर अन्य सभी आयामों के साथ प्राप्त सहसंबंध के मान सांख्यिकीय रूप से सार्थक हैं, अतः परिकल्पना, "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता एवं अनुभवों के प्रति खुलेपन के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है", आंशिक रूप से अस्वीकृत की जाती है।

तालिका 4.28 से यह स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का बहिर्मुखता, कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुभवों के प्रति खुलेपन के साथ धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर जितना अधिक होगा, उनमें बहिर्मुखता का स्तर भी उतना ही अधिक होने की प्रवृत्ति होगी। इसी प्रकार, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर अधिक होने पर कर्तव्यनिष्ठा का स्तर भी अधिक होने की प्रवृत्ति होगी। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के उच्च स्तर के साथ अनुभवों के प्रति खुलेपन का स्तर भी अधिक होने की प्रवृत्ति होगी तथा इसके विपरीत, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के निम्न स्तर के साथ इन आयामों के अपेक्षाकृत निम्न स्तर पाए जाने की प्रवृत्ति होगी।

तालिका 4.28 से यह भी स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं भावनात्मक स्थिरता के बीच ऋणात्मक एवं सार्थक सहसंबंध पाया गया है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर बढ़ने के साथ भावनात्मक स्थिरता के प्राप्तांक में कमी होने की प्रवृत्ति है तथा आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का स्तर कम होने पर भावनात्मक स्थिरता के प्राप्तांक में वृद्धि होने की प्रवृत्ति है।

इसके विपरीत, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं सहमतिशीलता के बीच 'आर' का मान 0.039 पाया गया, जो 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। अतः आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं सहमतिशीलता के बीच कोई सार्थक संबंध स्थापित नहीं होता है।

निष्कर्ष: माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का बहिर्मुखता, कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुभवों के प्रति खुलेपन के साथ धनात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का भावनात्मक स्थिरता के साथ ऋणात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं सहमतिशीलता के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया।

चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के बीच संबंध का अध्ययन किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का बहिर्मुखता, कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुभवों के प्रति खुलापन के साथ धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध है। यह निष्कर्ष पूर्ववर्ती अध्ययनों से समर्थित है, जिनमें आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का बहिर्मुखता, कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुभवों के प्रति खुलेपन के साथ सकारात्मक संबंध पाया गया (अमराई एवं अन्य, 2011य फरसानी एवं अन्य, 2014य सूद एवं अन्य, 2012)। अब्दुल्ला एवं अन्य (2015) ने भी आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के विभिन्न आयामों का बहिर्मुखता, कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुभवों के प्रति खुलेपन से सकारात्मक संबंध पाया। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता व्यक्ति में आत्म-जागरूकता, जीवन के उद्देश्य की समझ, सामाजिक सहभागिता, उत्तरदायित्व तथा नए विचारों के प्रति ग्रहणशीलता को बढ़ावा देती है।

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और सहमति शीलता के बीच वर्तमान अध्ययन में संबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं पाया गया। यह निष्कर्ष कुछ पूर्ववर्ती अध्ययनों से भिन्न है, जिनमें आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा सहमति शीलता के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया (अब्दुल्ला एवं अन्य, 2015य अमराई एवं अन्य, 2011य सूद एवं अन्य, 2012)। इस भिन्नता का कारण विद्यार्थियों की आयु एवं विकासात्मक अवस्था, सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, पारिवारिक एवं विद्यालयी वातावरण तथा प्रयुक्त मापन उपकरणों में अंतर हो सकता है।

वर्तमान अध्ययन में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और भावनात्मक स्थिरता के बीच ऋणात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया। यदि व्यक्तित्व मापनी में उच्च अंक भावनात्मक अस्थिरता अथवा न्यूरोटिसिज्म को प्रदर्शित करते हैं, तो यह निष्कर्ष अमराई एवं अन्य (2011) तथा फरसानी एवं अन्य (2014) के निष्कर्षों के अनुरूप है, जिन्होंने आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता तथा न्यूरोटिसिज्म के बीच ऋणात्मक संबंध पाया। दूसरी ओर, अब्दुल्ला एवं अन्य (2015) ने आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के कुछ आयामों और न्यूरोटिसिज्म के बीच धनात्मक संबंध भी पाया, जिससे स्पष्ट होता है कि यह संबंध विभिन्न आयामों और संदर्भों में भिन्न हो सकता है। वर्तमान निष्कर्ष का संभावित कारण यह है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता आत्म-जागरूकता, अर्थबोध और परिस्थितियों के प्रति संतुलित दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हो सकती है।

अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का बहिर्मुखता, कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुभवों के प्रति खुलेपन के साथ सकारात्मक, भावनात्मक अस्थिरता के साथ नकारात्मक तथा सहमति शीलता के साथ असार्थक संबंध है। अतः आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों से भिन्न-भिन्न प्रकार से संबंधित हो सकती है तथा इन संबंधों को समझने में विकासात्मक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों से महत्वपूर्ण संबंध है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का बहिर्मुखता, कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुभवों के प्रति खुलापन के साथ धनात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया, जबकि भावनात्मक स्थिरता के साथ ऋणात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया। इसके विपरीत, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और सहमति शीलता के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया। अतः आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कुछ प्रमुख आयामों से संबंधित एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखी जा सकती है।

संदर्भ

- अब्दुल्ला, ए. एम., एलियास, एच., महुदुद्दीन, आर., एवं उली, जे. (2015)। द रिलेशनशिप बिटवीन स्पिरिचुअल इंटेलिजेंस एंड पर्सनैलिटी ट्रेट्स अमंग जॉर्डेनियन यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स। साइकोलॉजी रिसर्च एंड बिहेवियर मैनेजमेंट, 8, 111–121। <https://doi-org/10-2147/PRBM-S76352>
- अम्राई, के., फराहानी, एम. एन., इब्राहिमी, एम. आर., एवं बघेरियन, एफ. (2011)। रिलेशनशिप बिटवीन पर्सनैलिटी ट्रेट्स एंड स्पिरिचुअल इंटेलिजेंस अमंग यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स। प्रोसीडिंग्स दृसोशल एंड बिहेवियरल साइंसेज, 15, 609–612। <https://doi-org/10-1016/j-sbspro-2011-03-149>
- एंथनी, एम., एवं सुब्रमणियन, के. (2016)। इन्प्लुएंस ऑफ स्पिरिचुअल इंटेलिजेंस ऑन पर्सनैलिटी फैक्टर्स अमंग कॉलेज स्टूडेंट्स। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 3(4), 120–127।
- एमन्स, आर. ए. (2000)। इज स्पिरिचुअलिटी एन इंटेलिजेंस? मोटिवेशन, कॉग्निशन, एंड द साइकोलॉजी ऑफ अल्टीमेट कन्सर्न। द इंटरनेशनल जर्नल फॉर द साइकोलॉजी ऑफ रिलिजन, 10(1), 3–26।
- फरसानी, एम. ए., एवं अन्य। (2014)। रिलेशनशिप बिटवीन स्पिरिचुअल इंटेलिजेंस एंड पर्सनैलिटी ट्रेट्स अमंग फिजिकल एजुकेशन मैनेजर्स। जर्नल विवरण मूल प्रकाशन से सत्यापित किया जाना है।
- किंग, डी. बी. (2008)। रीथिंकिंग क्लेम्स ऑफ स्पिरिचुअल इंटेलिजेंसरू ए डेफिनिशन, मॉडल, एंड मेजर ख्मास्टर डिग्री थीसिस, ट्रेंट यूनिवर्सिटी,।
- किंग, डी. बी., एवं डीचिको, टी. एल. (2009)। ए वायबल मॉडल एंड सेल्फ-रिपोर्ट मेजर ऑफ स्पिरिचुअल इंटेलिजेंस। द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रांसपर्सनल स्टडीज, 28(1), 68–85। <https://doi-org/10-24972/ijts-2009-28-1-68>
- मैकक्रे, आर. आर., एवं कोस्टा, पी. टी., जूनियर। (1992)। रिवाइज्ड एनईओ पर्सनैलिटी इन्वेंटरी (एनईओ पीआई-आर) एंड एनईओ फाइव-फैक्टर इन्वेंटरीरू प्रोफेशनल मैनुअल। साइकोलॉजिकल असेसमेंट रिसोर्सज।
- सूद, एस., बख्शी, ए., एवं गुप्ता, आर. (2012)। रिलेशनशिप बिटवीन पर्सनैलिटी ट्रेट्स, स्पिरिचुअल इंटेलिजेंस एंड वेल-बीइंग इन यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स। जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 3(10), 1–6।
- जोहर, डी., एवं मार्शल, आई. (2000)। एसक्यूरू कनेक्टिंग विद आवर स्पिरिचुअल इंटेलिजेंस। ब्लूमसबरी।